जब खोया हुआ टुकड़ा जाकर वापिस मिला

शेल

टोल्केन के अनुसार, “सबसे अच्छी पुस्तकें बच्चों के लिए नहीं लिखी जातीं हैं, पर फिर भी बच्चे उन्हें खूब पसंद करते हैं. ऐसी पुस्तकें हमारी सबसे गहरी इच्छाओं और डरों को स्वर देती हैं. इस प्रकार की पुस्तकें सभी उम्र के लोगों को अविभूत करती हैं.” पर इन किताबों का जादू तभी काम करता है जब “व्यस्क लोग यह मानने को तैयार हों कि उनके पास तमाम चीज़ों का जवाब नहीं है.”

यह किताब 1976 में पहली बार छपी. उसका सन्देश था कि सच्चा प्रेम हमें सम्पूर्ण नहीं बनाता है. वैसे लोगों को यह भ्रम होना संभव है. पर सच्चे प्रेम से हम ज़रूर कुछ विकसित होते हैं और जो हम वाकई हैं वो बनते हैं. यह कहानी उन लोगों के लिए विशेष रूप से मायने रखती है जो कभी “रक्षक” सिंड्रोम या फिर “शहीद” सिंड्रोम का शिकार हुए हों जहाँ उन्होंने अपने भले के लिए किसी साथी की तलाश की हो, और जिसके नतीजे हमेशा दुखदाई और तबाह करने वाले रहे हों.

खोया हुआ टुकड़ा बिलकुल अलग बैठा था.....

वो किसी के आने का इंतज़ार
कर रहा था, जो उसे कहीं
और लेकर जाए.

कुछ फिट होते थे....
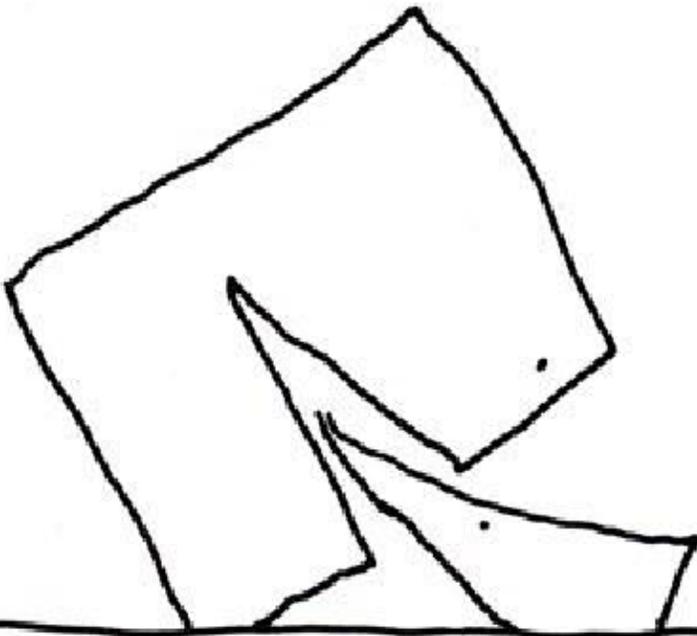
पर वे लुढ़कना नहीं जानते थे.
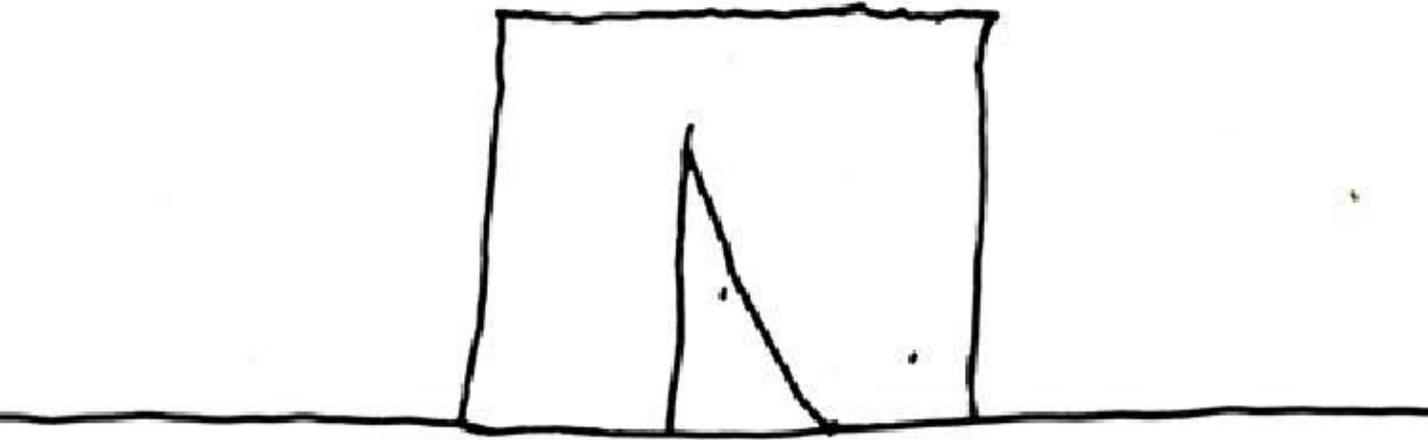
दूसरे लुढ़कना जानते थे
पर वे फिट नहीं होते थे.
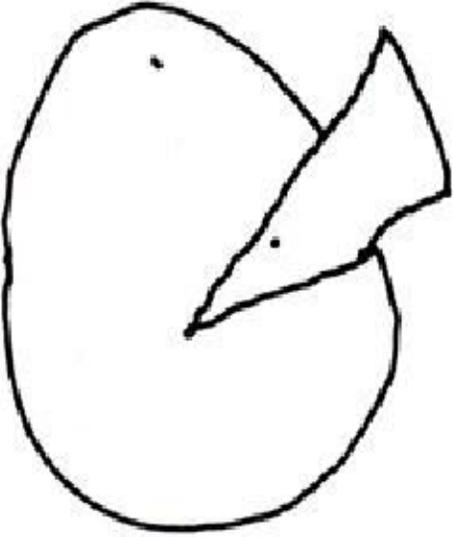
कुछ के बहुत सारे टुकड़े गायब थे.
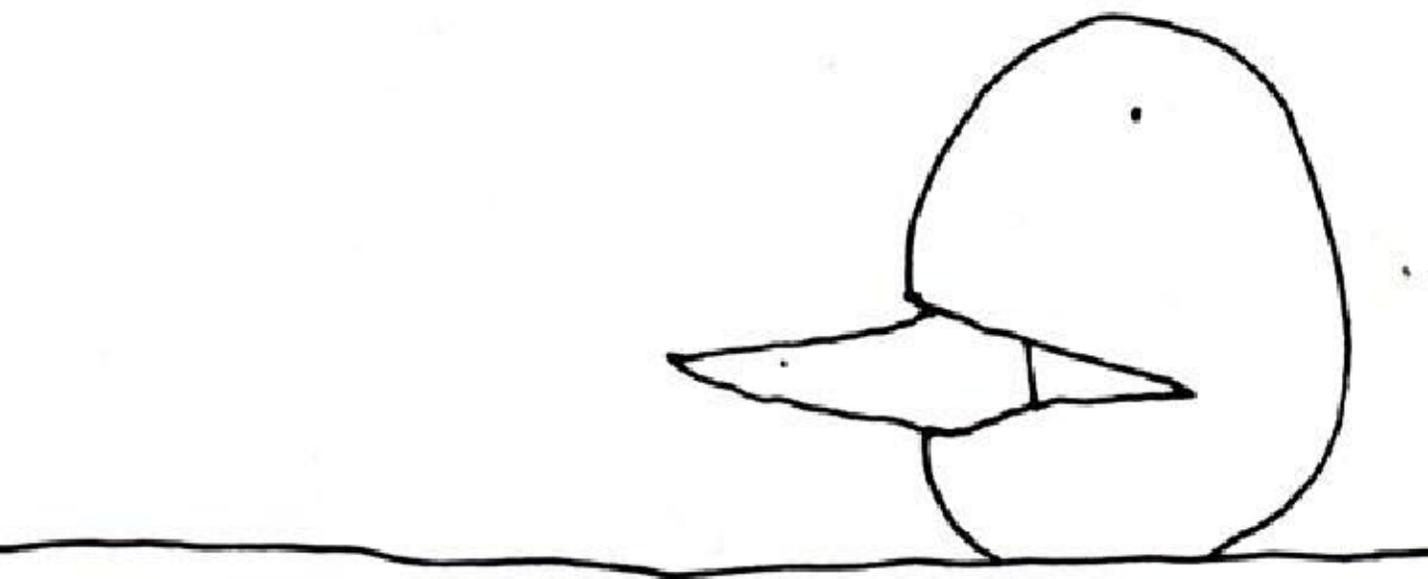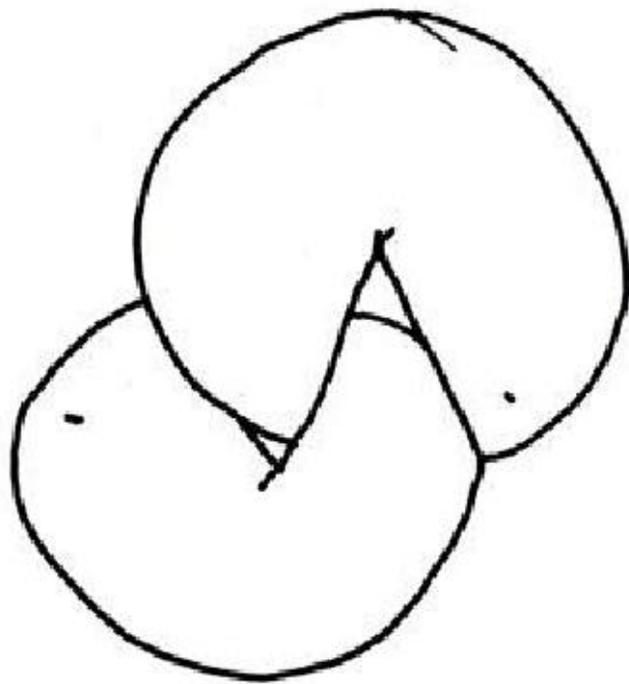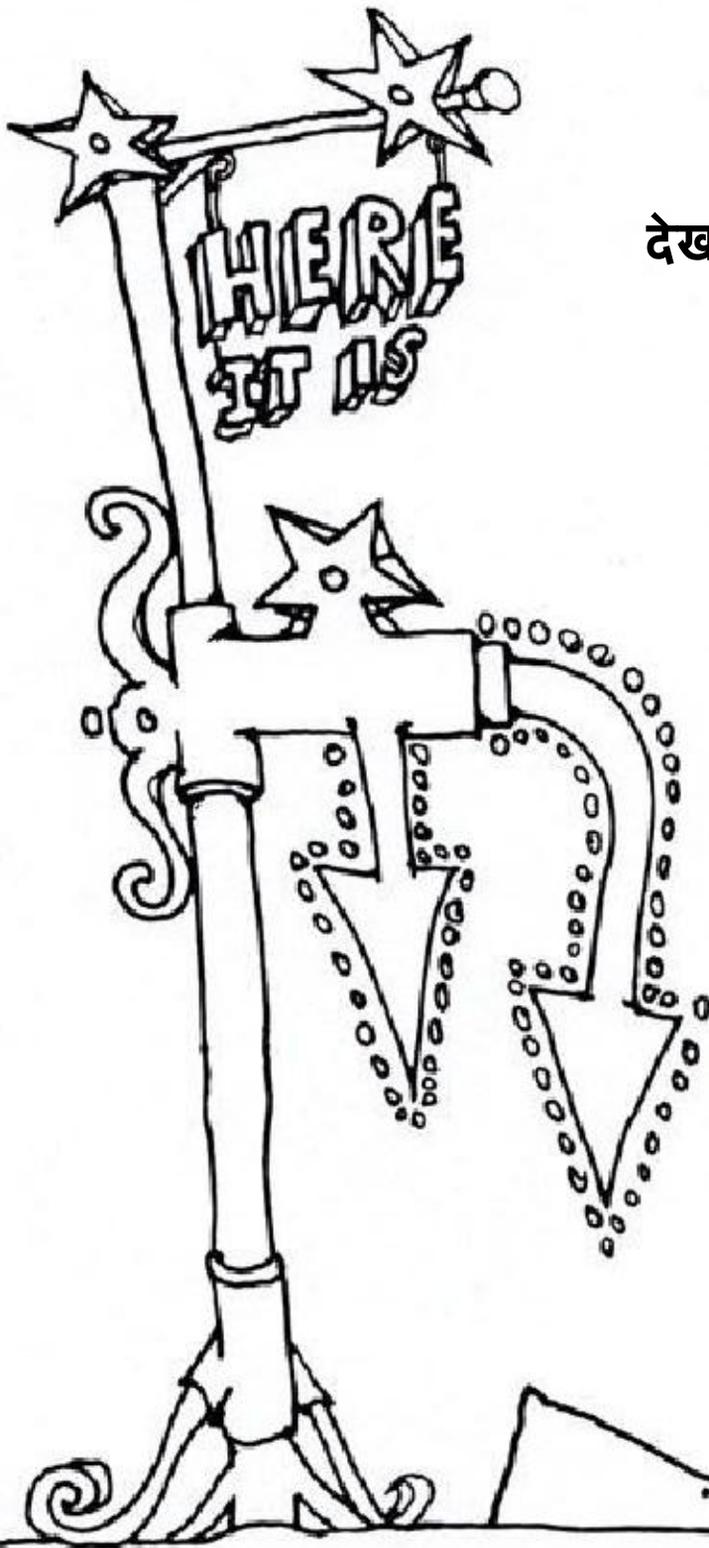
देखो यह रहा
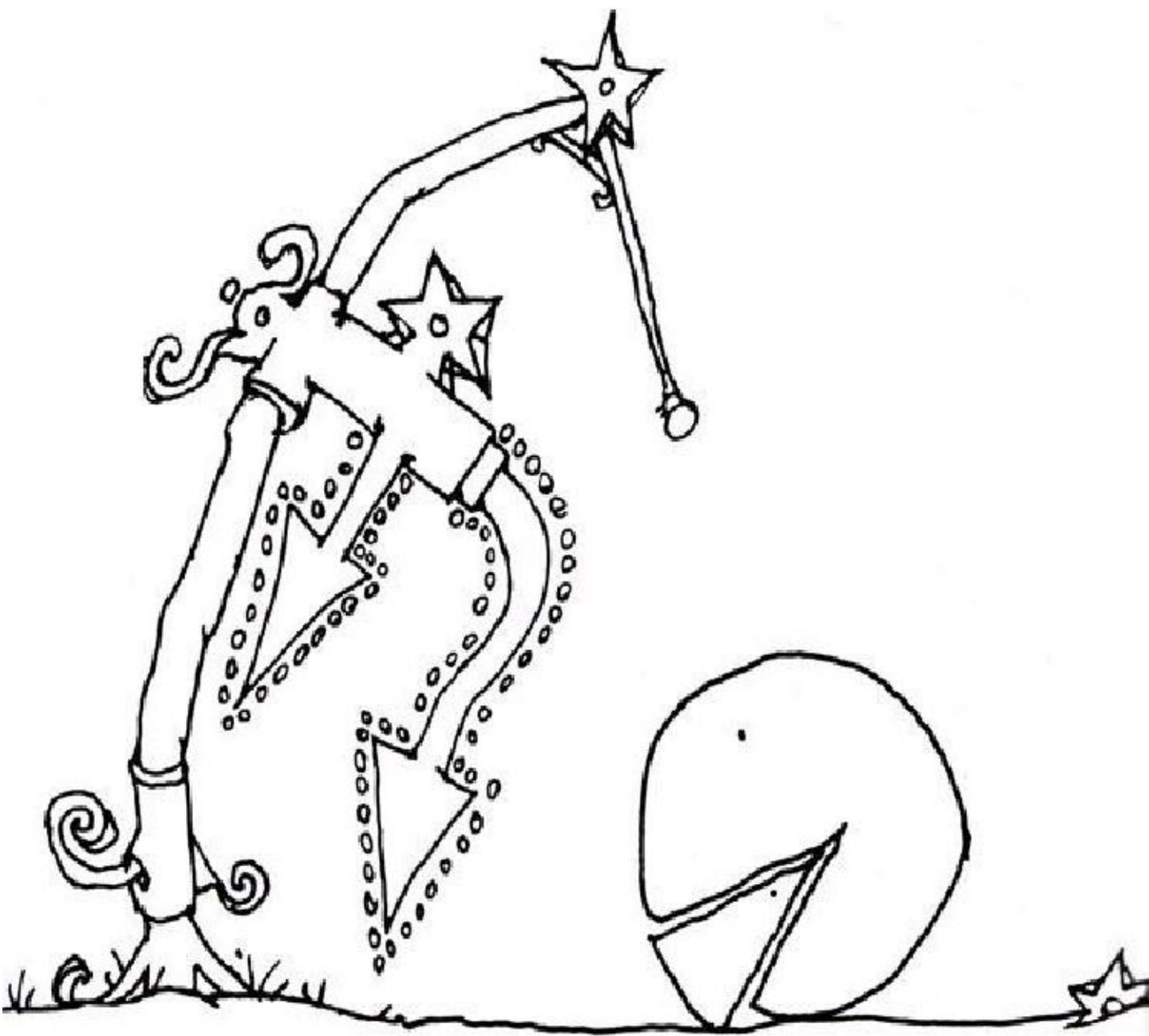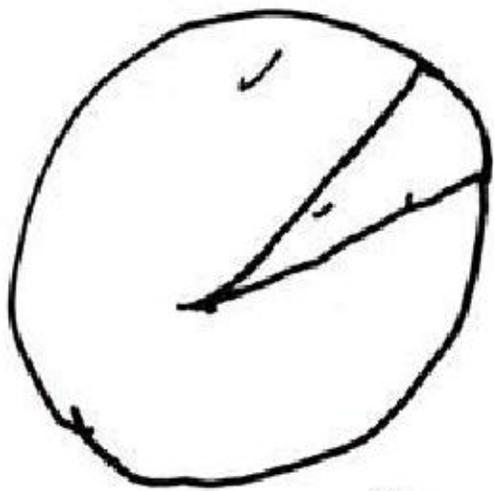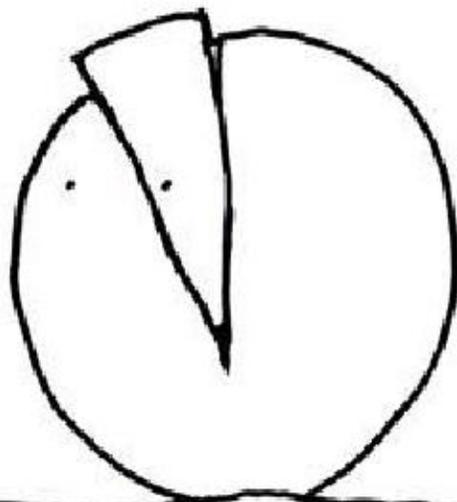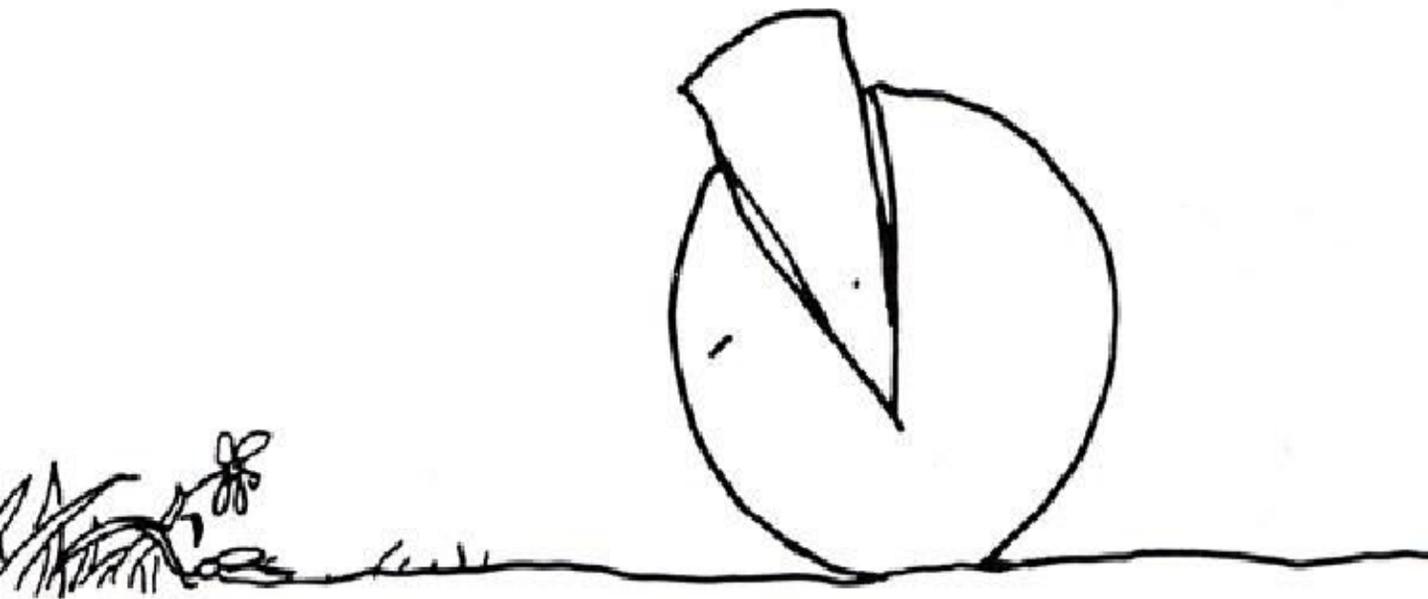
“मुझे यह पता नहीं था
कि तुम बढ़ने जा रहे हो.”

“मुझे भी यह नहीं पता था,”
खोए हुए टुकड़े ने कहा.

आंह...

फिर एक दिन,

कोई आया जो देखने में बिलकुल
अलग दिखता था.
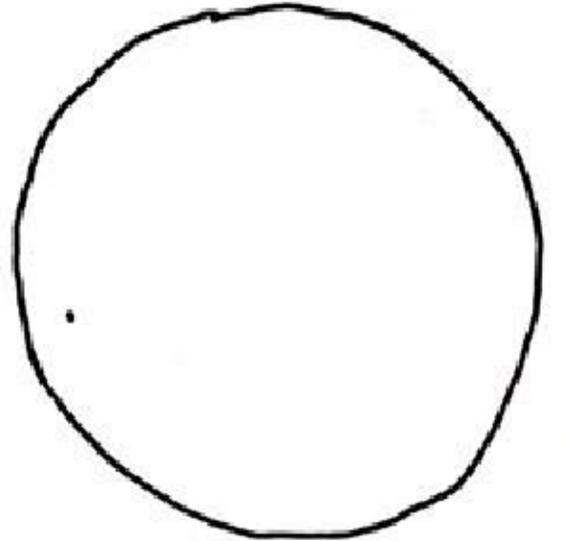
वो काफी देर तक वहीं बैठा रहा.
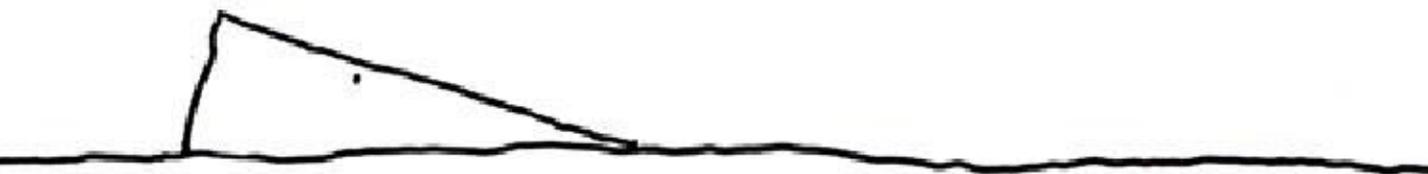
फिर....

धीरे-धीरे...

वो अपने एक सिरे के बल उठा ....

... और उसने धम्म से पल्टी मारी.

धम्म!

PLOP!

फिर उसके नुकीले किनारे घिसने लगे....

फिर वो पल्टी मारने की बजाए कूदने लगा ...